बाल शिक्षा के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन (मध्यकालीन शिक्षा के संदर्भ में)

डॉ० विमल कुमार
लरसा, वभना, जहानाबाद

सारांश

बाल शिक्षा के विकास के अनेक पहलू है जिनमें मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था के प्रारूप मध्यकालीन भारत के संदर्भ को संकेतित करता है। हमारे देश में सन् 1192 ईस्वी से 1708 ई. तक मुस्लमान शासक रहे। मध्यकालीन भारत में बाल शिक्षा के विकास पर कार्य किया गया। तत्कालिक शासकों ने अपने धर्म प्रचार के लिए शिक्षा को अतिआवश्यक समझा है। अकबर के शासनकाल में प्राथमिक शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ। बाल शिक्षा के अध्ययन हेतु मकतबों की व्यवस्था थी। मकतब में इस्लामी प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को पढना, लिखना, गणित की शिक्षा देना था। मुस्लिम शिक्षा व्यावहारिक जीवन हेतु थी। बाल शिक्षा निःशुल्क थी। इस काम में शिक्षा को अच्छा संरक्षण प्राप्त था। संस्कृत व हिन्दी के स्थान पर उर्दू, अरबी व फारसी भाषाओं का अध्ययन व अध्यापन प्रचलित था। इस काल में सामान्य शिक्षा के साथ विशिष्ट शिक्षा का भी आयोजन किया गया था। मुस्लिम शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों में अन्तर्निहित मानसिक शक्ति को प्रकाशित एवं विकसित करना और बौद्धिक शक्ति को अनुशासित करना था।

प्रस्तावना:

बाल शिक्षा के विकास के अनेक चरण है। जिनमें 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में पहली बार इस्लाम धर्म के अनुयायियों ने भारत पर आक्रमण किया परन्तु वह सफल नही रहा । मुस्लिम शासकों की अपनी अलग अलग संस्कृति थी तथा अपने शासन को मजबूत करने के लिए उन्होंने इस्लामी संस्कृति व इस्लामी शिक्षा का प्रचार किया। उच्च पद, सांसारिक सम्पन्नता, सम्मान आदि के लिए शिक्षा जरूरी समझी जाने लगी। हजरत मुहम्मद साहब ने शिक्षा के औचित्य में कहा था ''एक माता पिता जो भी बहुमूल्य उपहार अपने बच्चों को भेंट करते हैं उन सभी में शिक्षा का उपहार सर्वोच्च है। जब इस्लाम धर्म का विश्व क्षितिज पर उदय हुआ मुस्लिम शासक हिन्दुस्तान की ओर आकृष्ट होने लगे। मुगल सभ्यता के तीव्र एवं कट्टर प्रवाह ने प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के परिप्रेक्ष्य को नष्ट भ्रष्ट ही नही किया बल्कि मूल सहित नष्ट करने का प्रयास किया। तुगलक वंश के शासक फिरोजशाह तुगलक के समय शिक्षा का जो स्वरूप था, उसके बारे में इतिहासविद् एन.एन.लॉ लिखते हैं ''उसने एक अत्यधिक सुन्दर उद्यान में, जहां भव्य इमारत बनी थी शिक्षा का शुभारम्भ किया। यहां का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त ही सुन्दर स्वच्छ तथा प्रभावी चिन्तन मनन हेतु उपयुक्त प्रतीत होता था। विद्यालय की परिसीमा में एक सुन्दर झील भी थी जिसमें भव्य इमारत का प्रतिबिम्ब झलकता था। यह वास्तव में अति सौन्दर्ययुक्त दृश्य था जहां सैकड़ों छात्र समूह, इस इमारत के नक्काशीदार संगमरमरी फर्शो पर चहलकदमी करते थे ।'' इस उद्धरण में मुस्लिम शिक्षा के प्रारम्भिक कदमों की मधुर प्रतिध्वनि के संकेत

लरसा, वभना, जहानाबाद

मिलते हैं। मुस्लिम साम्राज्य का उत्तरकाल मुस्लिम शिक्षा का स्वर्णकाल कहा जाता है । अकबर के शासन काल में प्राथमिक शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ तथा भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु सतत् प्रयत्न किये। अब्दुल फजल ने प्रसिद्ध ग्रंथ आइने अकबरी की रचना की जिसमें तात्कालिक शिक्षा के सन्दर्भ में एफ.ई.केई के विचार इस प्रकार है:-''सम्राट अकबर के निर्देश थे कि प्रत्येक छात्र को वर्णमाला का विभिन्न लिपियों में ज्ञान कराया जाये।

प्रत्येक छात्र को लिपि के वर्णों को याद करने हेतु दो दिनों की मोहल्लत प्रदान की जाये। ''मुस्लिम शिक्षा एक अभारतीय प्रणाली थी। इसका भारत में प्रत्यारोपण किया गया। मुस्लिम शासकों के तीव्र प्रहार एवं प्रतिरोध के कारण गाँव गाँव मकतब, मस्जिद, मदरसों में मुस्लिम धार्मिक शिक्षा का तूफानी प्रवाह छाने लगा, किन्तु हिन्दू शिक्षा फिर भी अपना दीप, छोटे छोटे, दूरगामी आंचलिक क्षेत्रें में पाठशालाओं, मठों, तथा मन्दिरों के माध्यम से प्रज्वलित किये रही। ये क्षेत्र मुस्लिम शासकों से या तो वंचित रहे या अन्य कारणों से उनके प्रतिरोध का सामना करते रहे थे। प्रारंभिक तथा निम्न माध्यमिक शिक्षा के लिए इस्लामी देशों में ''मकतबों'' की व्यवस्था थी। मकतब शब्द कुतुब से बना है जिसका अर्थ है 'लेखन'। अत: मकतब का अर्थ एक ऐसे स्थान से है जहाँ लिखना सिखाया जाये। मुगलकाल में भारत में मकतबों की भरमार हो गई थी। मकतब इस्लामी प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बालक को पढ़ना, लिखना गणित की शिक्षा देना। ऐसी धार्मिक प्रार्थनाएँ सिखाना था, जो प्रतिदिन की जाती थी। मकतब में अदब, तहजीब भी पढ़ाया जाता था। इस काल की शिक्षा के बारे में डॉ. एफ.ई.केई ने कहा है-''मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी, जिसका भारत में प्रतिरोध किया गया तो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प सम्बन्ध रखकर अपनी नवीन भूमि में विकसित हुई।

महत्व एवं आवश्यकता :-

भारत में बाल शिक्षा के विकास के अध्ययन की घनी आवश्यकता है। मुस्लिम शिक्षा में अनेक ऐसे तत्व विद्यमान हैं जो आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होते हों। यदि इन्हे प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जाये तो शिक्षा में सर्वांगीणता के लक्ष्य की पूर्ति भी संभव हो सकती है। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के फलस्वरूप यहां की प्राचीन शिक्षा प्रणाली जर्जर होकर विलीन होने लगी तथा उसके स्थान पर एक नवीन शिक्षा प्रणाली 600 वर्ष तक प्रचलित रही जो मकतबों के रूप में इसके अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। मुस्लिम शिक्षा व्यावहारिक जीवन हेतु थी। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को इस जीवन हेतु तैयार किया जाना चाहिए एवं शिक्षा को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाये। इस दिशा में औरंगजेब के प्रयास प्रशंसनीय है। औरंगजेब ने अपने व्यक्तिगत शिक्षक मूल्लाशाह सलह की सार्वजनिक रूप से निन्दा की थी क्योंकि उसने उन्हें व्यावहारिक शिक्षा नहीं दी थी। इस काल में शिक्षा नि:शुल्क दी जाती थी। साथ ही साथ मकतबों व मदरसों में रहने वाले छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा के अलावा नि:शुल्क निवास, भोजन और वस्त्रें की भी सुविधा थी। मध्यकालीन शिक्षा का आज इतना महत्व है कि मध्यकालीन शिक्षा संस्थाओं ने कक्षा नाटकीय पद्धति का प्रचलन था। इसमें उच्च कक्षाओं के प्रतिभाशाली छात्र या नायक निम्न कक्षाओं के छात्रों को पढाकर शिक्षा कार्य में अध्यापक की सहायता करते थे। इस गुण में शिक्षा के प्रति लौकिक दृष्टिकोण के कारण शिक्षक की स्थिति में बदलाव आ गया था। इस काल में सभी शासकों ने शिक्षा में रुचि व्यक्त की। शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए छात्रों को छात्रवृत्तियां एवं शिष्य कृतियां प्रदान की जाती थी। आज आवश्यकता है हुमायू जैसे व्यक्तित्व की जिसने शिक्षा के प्रचार के लिए पुस्तकालय स्थापित करवाया था। इस काल ने शिक्षा को अच्छा संरक्षण प्राप्त हुआ था।

हमारे प्राचीन मनीषियों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है-''सा विद्या सा विमुक्तेय।''अर्थात् विद्या वह है तो मनुष्य को अज्ञान से मुक्त करती है, उसे अन्धकार से निकालकर प्रकाश

दिखाती है। आज के वैज्ञानिक युग में शिक्षा को आध्यात्मिक विकास और मोक्ष प्राप्ति का साधन बनाना सर्वथा अनुचित है। जिस प्रकार मुस्लिम शिक्षा में व्यावहारिक विषयों को महत्व दिया जाता था, उसी प्रकार भारत की आधुनिक शिक्षा में भी दिया जाना चाहिए। क्योंकि व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करके छात्र-समाज के उपयोगी सदस्य बन सकते हैं और साथ ही अपनी जीविका का सरलता से उपार्जन भी कर सकते हैं। मुस्लिम शिक्षा, प्राथमिक व उच्च दोनों स्तरों पर निःशुल्क थी। आधुनिक भारतीय शिक्षा प्राथमिक स्तर पर तो निशुल्क है पर माध्यमिक और उच्च स्तरों पर नहीं। इन स्तरों पर शिक्षा को निशुल्क बनाया जाना चाहिए। क्यों कि आज की शिक्षा इतनी महंगी हो गई कि अनेक छात्र माध्यमिक और विशेष रूप से उच्च माध्यमिक उच्च शिक्षा के लिए लालायित होने पर भी उसे प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। आज के युग में अध्यापक व शिष्य के बीच जो अन्तर्सम्बन्धों में तनाव आ रहा है। उसे दूर करना अनिवार्य है। आवश्यकता इस बात की है कि इसे कैसे दूर किया जाए ? इस तनावपूर्ण स्थिति से निपटने हेतु मुस्लिम शिक्षा की आवश्यकता है। क्योंकि मुस्लिम शुरू के अधिकांश मदरसों में शिक्षक और छात्र साथ साथ रहते थे। फलस्वरूप उनमें व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हो जाता था।

इस सम्पर्क के माध्यम से शिक्षक, छात्रों में विशिष्ट गुणों का समावेश करते थे। आधुनिक भारतीय शिक्षा में व्यक्तिगत सम्पर्क की कोई चीज नहीं है। यही कारण है कि छात्रों में उच्छश्रृंखलता और अनुशासनहीनता की निरन्तर वृद्धि होती चली जा रही है। इसको समाप्त करने और छात्रों का चारित्रिक उन्नयन करने के लिए शिक्षकों से उनका निकट व्यक्तिगत सम्पर्क होना परम आवश्यक है। आज भारत में शिक्षक की स्थिति निम्न से निम्नतर होती चली जा रही है। आवश्यक है कि समाज और राज्य दोनों ही शिक्षक के प्रति अपने दृष्टिकोण को परिवर्तित करें। आज के भौतिकवादी युग में लौकिक शिक्षा की असीम आवश्यकताहै। किन्तु इस शाश्वत को विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए कि धर्म व्यक्ति के जीवन और चरित्र का प्रधान आधार स्तम्भ है। इसके अभाव में आज समाज में अकारण झूठ बोलना, स्वार्थवश धोखा देना, निजहित के लिए लूटमार करना, काम वासना की तृप्ति के लिए अबलाओं का अपहरण करना आदि देखने को मिलते हैं। अतः कहा जा सकता है कि आज भारत में जो शिक्षा प्रणाली चल रही है उसमें मुस्लिम शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार कर उन्हें अपनाना चाहिए तथा शिक्षा प्रणाली में इन सब बातों की आवश्यकता भी है। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद विद्यार्थी की कलम की स्याही को शहीद के खून से भी ऊँचा दर्जा प्रदान करते हैं। इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि आज मुस्लिम शिक्षा मध्यकालीन शिक्षा की कितनी आवश्यकता व महत्व है।

मध्यकालीन शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श :-

मुस्लिम काल में शिक्षा को समुदायों के आधार पर प्रचारित किया गया था। उस समय जो शिक्षा का प्रचार प्रसार किया गया वह मुस्लिम शासकों के व्यक्तिगत स्वार्थों तथा धार्मिक महत्वाकांक्षाओं से अभिभूत था। शिक्षा को मानवीय ज्ञान में विस्तार एवं वृद्धि का माध्यम बताया गया। हजरत मुहम्मद साहब का प्राथमिक उद्देश्य उनकी इस उक्ति से स्पष्ट होता है कि ''उपहार में स्वर्ण देने की अपेक्षा बच्चों को शिक्षा देना श्रेयस्कर है।'' शिक्षा के अभाव में धर्म एवं आध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति असम्भव है। इस ज्ञान के द्वारा व्यक्ति धार्मिक प्रेरणाएँ प्राप्त करने में सफल होता है। शिक्षा जनसंचार का माध्यम बनाने के हक में मुस्लिम शासकों ने इसे धर्म, सम्मानों, धार्मिक भारतीय शिक्षा का 'इस्लामीकरण' करना। इस काल की शिक्षा इस्लाम धर्म का पर्याय बन चुकी थी। बहुत से लोगों ने इसकी चकाचौंध, कट्टरता तथा अन्य प्रलोभनों के फलस्वरूप इसे स्वीकार कर लिया। अब तक शिक्षा 'मोक्ष प्राप्त' करने के अपने चरम से भटक चुकी थी क्योंकि नवीन धार्मिक संस्कारों ने इसकी चहुंमुखी प्रतिभा को धार्मिक एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति तक ही सीमित कर दिया था। निस्सन्देह

इस प्रकार तात्कालिक समाज में हिन्दू शिक्षा के रूढ़िगत संस्कारों का ह्रास तो हुआ। किन्तु सांसारिक उन्नति की प्राथमिकता के फलस्वरूप आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग हमेशा के लिए बन्द हो गये। इस शिक्षा से शासकीय वैभव, पद, यश प्राप्ति के प्रलोभनों ने भारतीयों को पथ-भ्रष्ट कर दिया तथा उन्होंने इस धर्म को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

विदेशियों को भारत-भूमि पर अपने जैसे धर्म, विचार, शिक्षा वाले अनुचरों की आवश्यकता थी, साथ ही उन्हें ऐसे लोगों की शीघ्र आवश्यकता थी। जिनसे वे अपने राजकीय कार्यो तथा विघटनकारी शक्तियों हेतु प्रतिवादी समूहों को जन्म दे सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होने लोगों को धार्मिक परिवर्तन हेतु प्रेरित ही नहीं किया बल्कि उनकी हित साधना की, पारिवारिक संबंध स्थापित किये, राजकाज में सहभागी बनाया। मुस्लिम मार्ग अधिक सुखद, सरल तथा ग्रहणीय है क्योंकि यह तात्कालिक ऐन्द्रिक सुखों को निवृत्ति का मार्ग मानता है। यही कारण था कि इस गुण ने भारतीयों की धार्मिक अभिवृतियों को विकृत कर दिया उनके लिए मुस्लिम शिक्षा एक ऐसा अस्त्र थी जिसके द्वारा वे भारतीय संस्कृति परम्पराओं तथा उनके प्रमुख केन्द्रों को नष्ट करना चाहते थे। भारत के प्रायः सभी मुस्लिम शासक निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी थे। कुछ शासक हिन्दू संस्कृति तथा शिक्षा को नष्ट करना चाहते थे लेकिन कुछ शासक ऐसे भी थे। जिन्होने भारतीय शिक्षा का प्रचार प्रसार तो किया ही साथ ही उसे प्रोत्साहन भी दिया। मुस्लिम शिक्षा का पहला उद्देश्य इस्लाम के बन्दो में ज्ञान के प्रकाश का विस्तार करना था। हजरत मुहम्मद ने ज्ञान को अमृत बताया और प्रत्येक मुस्लमान बच्चे से ज्ञानार्जन की आशा व्यक्त की। इसका एक उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना भी था। भारत में मुस्लिम शासको के धर्म प्रचार की अनेक विधियों में शिक्षा को भी स्थान दिया और इसके द्वारा भारत में इस्लाम का पर्याप्त प्रचार किया। मकतबों में अध्ययन काल के प्रारम्भ में ही कुरान की शिक्षा दी जाती थी। इन्ही उद्देश्यों के साथ ही विशिष्ट नैतिकता का प्रचार, मुस्लिम सिद्धान्तों, कानूनों तथा सामाजिक प्रथाओं का प्रचार भी शिक्षा का उद्देश्य था। सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति भी मुस्लिम शिक्षा का उद्देश्य रहा था। जो व्यक्ति शिक्षित होते थे, उन्हें मुस्लमान शासक सिपहसालार, काजी, अथवा वजीर के पद पर नियुक्त कर देते थे। इसी कारण हिन्दु भी मुस्लिम शिक्षा ग्रहण करने लगे। हिन्दु जनता के दृष्टिकोण को शिक्षा के द्वारा परिवर्तित करके मुस्लिम सभ्यता तथा संस्कृति का उपासक बनाना भी इस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रहा।

मध्यकालीन शिक्षा का प्राथमिक स्तर एवं शिक्षा प्रणालीः

मुस्लिम युग में शिक्षा की व्यवस्था मकतबों और मदरसों में की गई थी। मकतब 'प्राथमिक शिक्षा' और मदरसे 'उच्च शिक्षा' के केन्द्र थे। इनकी स्थापना मुस्लिम शासकों एवं धनी विद्या-प्रेमियों दोनो के द्वारा की गई थी।

प्राथमिक शिक्षा :- प्राथमिक शिक्षा मकतबों में दी जाती थी, 'मकतब' शब्द अरबी भाषा के 'कुतुब' शब्द से बना है जिसका अर्थ है :- उसने लिखा। इस प्रकार मकतब वह स्थान है, जहाँ लिखना सिखाया जाता है। समस्त मुस्लिम बालकों से मकबतों में शिक्षा प्राप्त करने की आशा की जाती थी, जिसमें वे दैनिक धार्मिक कृत्यों में प्रयोग किए जाने वाले कुरान के विशिष्ट भागों से अवगत हो जाए। इन मकतबों की संख्या इतनी अल्प थी कि समस्त मुस्लिम बालकों के लिए ज्ञान का अर्जन करना कठिन था।

मकतब में प्रवेशः- 'बिस्मिल्लाह' रस्म के द्वारा बालक को प्रवेश दिया जाता था। यह रस्म उस समय सम्पन्न की जाती थी, जब बालक 4 वर्ष, 4 माह, 4 दिन का होता था। इस अवसर पर बालक को नवीन वस्त्र धारण कराये जाते थे। बालक के समक्ष लिपि, कुरान की भूमिका एवं उसका 55 वां तथा 87 वां अध्याय रखा जाता था। मौलाना साहब कुरान की आयतों को पढ़ते थे और बालक से उनको दोहराते थे। यदि वह पूरा पाठ दोहराने में असमर्थ होता था, तो उसका 'बिस्मिल्लाह'

कह देना ही पर्याप्त समझा जाता था। इस प्रकार बालक शिक्षा प्रारंभ होती थी।

शिक्षा का पाठ्यक्रमः

बालकों को लिखना पढ़ना तथा प्रारंम्भिक गणित का ज्ञान कराया जाता था। कुरान की आयतें कंठस्थ करनी पड़ती थी, किन्तु उन आयतों का समझाना आवश्यक नहीं था। लिपि ज्ञान के बाद फारसी भाषा व व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। बालकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए 'गुलिस्ताँ' एवं 'बोस्ताँ' पढ़ाये जाते थे। इसके अतिरिक्त पैगम्बरों की कथाएँ, मुस्लिम फकीरों की कहानियां तथा फारसी कवियों की कविताओं का ज्ञान भी कराया जाता था। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मकतबों का रूप बहुत कुछ-परिवर्तन हो गया था। प्रारम्भ में अरबी के अक्षरों का ज्ञान तत्पश्चात् कुरान के अध्यायों का प्रपठन बताया जाता था। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों को पढ़ना सिखाना तथा उन्हे कतिपय बातें कंठस्थ कराना था।

शिक्षण विधिः- शिक्षण विधि मौखिक थी। बालकों को कलमा रटना तथा कुरान की आयतें कंठस्थ करनी पड़ती थी। लिखने के लिए तख्तियों का प्रयोग किया जाता था। जिन पर बालक मोटे सरकण्डे की कलम से लिखते थे। फिर उन्हें पतली कलम से कागज पर लिखने का अभ्यास कराया जाता था।

अन्य विशेषताएँ :- मकतबों में प्रातः काल तथा अपराह्न के समय शिक्षा का कार्यक्रम चलता था। शिक्षा निशुल्क थी। मकतबों में कबड्डी आदि खेल खेले जाते थे। जब छात्र मकतब में अपना विद्याध्ययन समाप्त करते थे तब उन्हे पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध हो जाता था।

शिक्षा प्रणाली :-

क. शिक्षा प्रणालीः-

मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के मुख्य दो रूप थे:-

1. प्रारम्भिक शिक्षा **2. उच्च शिक्षा**

ख. शिक्षण विधि :- मौखिक प्रणाली पर अधिक बल दिया जाता था।

ग. गुरु शिष्य सम्बन्ध :- इस युग में भी प्राचीन शिक्षा की भांति गुरु शिष्य संबंध बड़े घनिष्टतम छात्र गुरू का सम्मान करते थे। मोनीटर प्रथा का बोलबाला था। वह अध्यापक की अनुपस्थिति में कक्षा का संचालन करता था। श्री.एस.एम.जफर के अनुसार ''शिक्षकों की विद्वता उच्च कोटि की थी। उनका समाज में उच्च स्थान था। जबकि वेतन कम मिलता था फिर भी सभी स्थानों पर बड़ा आदर तथा विश्वास किया जाता था।''

3. मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना:

विभिन्न मुस्लिम शासकों ने अपने शासक काल में जो व्यवस्था कायम रखी थी वह इस प्रकार से है :-

1. शिक्षा के उद्देश्यः- इस्लाम धर्म में शिक्षा को ऊँचा स्थान दिया गया है इस शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य थे:-

क. धर्म का प्रचार करना।

ख. ज्ञान का प्रसार करना ।

ग. मुस्लिम शासन का दृष्टीकरण।

ध. इस्लामी संस्कृति का प्रचार।

ड. भौतिक सुख की प्राप्ति।

धर्म का संरक्षण।

2. शिक्षा का संगठन :- मुस्लिम शासक धर्म के कट्टर अनुयायी थे। उन्होंने धर्म प्रचार हेतु दो मकतब व मदरसों की स्थापना की एवं शिक्षा के प्रचार के साथ साथ धर्म का प्रचार प्रसार भी किया।

3. अध्यापन विधि :- इस युग तक शिक्षण की कोई विशेष विधि विकसित नहीं हो पाई थी। शिक्षण मौखिक था विषयवस्तु को कंठस्थ करने पर बल दिया जाता था। शिक्षा मौखिक होने के कारण अध्यापक को भाषण पद्धति का ही सहारा लेना पड़ता था। कक्षाओं में सामूहिक रूप से पाठ विशेषकर पहाडे रटवाने की प्रथा थी।

4. परीक्षा प्रणाली :- इस्लामी शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों की किसी भी प्रकार की व्यवस्थित परीक्षा प्रणाली का चलन नहीं था। आधुनिक युग के समान मासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक परीक्षाएँ नहीं होती थी। किसी भी प्रकार का प्रमाण पत्र देने का प्रचलन नहीं था।

किसी विषय में विशेष योग्यता हासिल कर लेने के उपरान्त 'काबिल', फाजिल, 'आलिम' आदि उपाधियाँ अवश्य दी जाती थी।

5. दण्ड,अनुशासन तथा पुरस्कार:- मकतब तथा मदरसों में अनुशासन का बड़ा ध्यान रखा जाता था। अनुशासनहीनता पर, छड़ी, लात, घूंसे, मुर्गा बनाना, खड़े कर देना आदि दण्ड दिये जाते थे। प्रतिभावान तथा अध्ययनशील बालकों को शिक्षकों, राजा तथा उदार धनियों के द्वारा पुरुस्कृत किया जाता था।

6. गुरु शिष्य सम्बन्ध :- मुस्लिम युग में गुरु शिष्य संबंध मधुर थे। शिष्य अपने उस्ताद के बताये हुए आदर्शों पर चलते थे तथा गुरू अपने शिष्यों को पुत्रवत् समझकर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की चेष्टा किया करते थे।

7. छात्रवास :- इस युग में शिक्षा के केन्द्र मकतब व मदरसे थे जो मस्जिद के साथ जुड़े रहते थे। मकतबों के साथ छात्रावास की व्यवस्था नहीं थी जबकि मदरसों के साथ छात्रवास जुड़े रहते थे।

8. विशिष्ट शिक्षाएँ :-

अ. नारी शिक्षा ब. ललित कलाओं की शिक्षा

निष्कर्ष :

हमारे देश में सन् 1192 ई0 से 1708 ई0 तक मुस्लमान शासन रहा। इस युग में मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव हमारे देश की संस्कृति पर पड़ता रहा। मुस्लिम शासकों ने भारतीय शिक्षा के स्वरूप को बदलकर एक नवीन शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली को नष्ट करने के प्रयत्न किये गये। मुहम्मद गौरी ने पाठशालाओं को विध्वंस करके मकतबों तथा मदरसों का निर्माण करवाया। मुगल काल में दो प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाएँ चली प्रथम इस्लामी शिक्षा और दूसरी परम्परागत रूप से चली आ रही भारतीय शिक्षा। इस काल में शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार करना था। संस्कृत व हिन्दी के स्थान पर उर्दू, अरबी व फारसी भाषाओं का अध्ययन व अध्यापन प्रचलित था। गणित व संगीत इस काल में पाठ्यक्रम के मुख्य विषय थे। शिक्षण विधि मुख्यत: व्याख्यान विधि थी। इस काल में बाल शिक्षा मकतबों में प्रदान की जाती थी। अनुशासनहीनता पर छात्राओं को पीटा जाता था। इस काल में सामान्य शिक्षा के साथ विशिष्ट शिक्षा का भी आयोजन किया गया था। मुस्लिम शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों में अन्तर्निहित मानसिक शक्ति को प्रकाशित एवं विकसित करना और बौद्धिक शक्ति को अनुशासित करना था। अत: इन पर अत्यधिक जोर दिया जाता था।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची:

1. पाण्डेय डॉ. रामशकल, डॉ. ककणाशंकर मिश्र, भारतीय शिक्षा की समसायिक समस्याऐं, P.No.17 आर.एस.ए इंटरनेशनल,आगरा-2
2. भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं, भारतीय शिक्षा की समसायिक समस्याऐं, P.No.17 आरएसए इंटरनेशनल, आगरा-2
3. शर्मा डॉ.के.के.,आर.एल.चौपड़ा,भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास स्वाति पब्लिकेशन्स P.No.32
4. डॉ.सी.एस. शुक्ला, भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास- इण्टरनेशनल पब्लिशिंक हाउस,2009 Page No.-46.47
5. त्यागी-सुरसरन दास, भारत में शिक्षा का विकास अग्रवाल प.आगरा-7 (2008) पृ. सं. 51-52
6. डॉ. कपूर- उर्मिला, भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याऐं, साहित्य प्रकाशन आगरा- पृ. सं. 4
7. वर्मा-जी.एस., भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास 2008 इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस-मेरठ पृ.सं. 33
8. त्रिपाठी-डॉ. शालिग्राम, भारतीय शिक्षा का इतिहास (1999), राधा पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली, पृ.सं. 58-59
9. किसलय, प्रसाद, डॉ. शरदेन्दु, डॉ. गोविन्द,भारत में शिक्षा का विकास प्र.स.-27 (2006), डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस-नई दिल्ली।